



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 240]

नई बिल्ली, शुक्रवार, विसम्बर 29, 1989/पौष 8, 1911

No. 240] NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 29, 1989/PAUSA 8, 1911

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

श्रम मंत्रालय

मर्यादा

नई दिल्ली, 24 दिसम्बर, 1989

मर्यादा श्री-2101/2/89-उच्च वी. --प्राप्ते दिनांक 17 जुलाई
1985 के पर्याय मध्या वी 21030/1/95--उच्च वी. ने आग्रा,
लाल बाजार नवी उचाग के लिये लैलग इकाय गजर्डी, वारंनिमा-
लिमिटेड गजर राग विचारार्दि विधायी के गांव निगांव द्वारा दे-
गठन

प्रधानमंत्री

श्री जगमोहन भाल टड़न

विधायिका कार्यालयिक वर्तमान सदार

(1) श्री डॉ श्री कदम किलान गमा मर्यादा

(2) श्री श्री पंडित गन्धी।

कर्मचारिया का उत्तिविधित वर्तमान सदार

(1) श्री लक्ष्मीनारायण

(2) श्री वरेष्वर नारायण

मर्यादी वीरेश्वर नारायणी श्रीर श्री श्री कदम के न्यायपत्र द्वारा के
कलमस्तप, दिनांक 23-1-1986 के आदान पद्धता श्री-24030/1/85--
उच्च वी. नेतृत्व वी भाज पाठक और श्री शिवार्जीगव पाठिल वा. व्रस्त
कर्मचारिया तथा नियोजकों का प्रतिविधित करने के लिए नियुक्त निया-
गया था --

विचारार्दि विधाय

(क) कर्मचारियों के एवगा (मैत्रेयन, निपिक्षय, पर्यवर्धी श्रादि) का
निश्चय करना किंवा गवाचारित मन्त्रदर्शी निर्विक के सीमांकन
में लाया जाना चाहिए।

(ख) उचित मन्त्रदर्शी समिति की रिपोर्ट में वशानिर्धारित उचित
मन्त्रदर्शी के मित्रानों के आवार पर मन्त्रदर्शी ठाका तैयार रखना,

राजीवरण

मन्त्रदर्शी जाका तैयार रखने समय, मन्त्रदर्शी बोर्ड उचित मन्त्रदर्शी में
मन्त्रित मिथाना के अवाका निर्मिति की भी ज्ञान में रखेगा।

(1) विकासनील अव्यवस्था में हम उत्तोग की आवश्यकताएँ।

(2) जीवी उचाग की विशेषताएँ।

(3) सामाजिक व्याप के आवश्यक रूप;

(4) मजदूरी भिक्षारियों को ऐसी रीति से भर्जित करने की आवश्यकता जिससे कर्मचारियों को अपना कौशल बढ़ाने की प्रेरणा मिले;

(5) उत्पादकता को बढ़ावी में संबद्ध करने की सम्भवता।

(6) भार्य के अनुरूप आदायगी की पड़ति लागू करने की वांछनीयता। स्वर्णीकरण 100-कार्ये के अनुरूप आदायगी की पड़ति लागू करने सभी बोर्ड न्यूनतम (जीवन निर्धारित) मजदूरी निर्धारित करने की भी अधिक अम तथा अनुचित गति से काम करवाने से बदलने की आवश्यकता को व्याप्त में रखेगा। जीवी उद्योग के लिए गठित हम तीमरे मजदूरों बोर्ड के लिए यह भी आवश्यक है कि वह मजदूरी निर्धारण करने के लिए उत्पादकता को एक कारक भानने के प्रश्न की नए सिरे से जाग करें।

2. मजदूरों बोर्ड द्वारा 9-1-1986 को अन्यरित राहत प्रदान करने के लिए की गई सिफारिशें सरकार ने 7 अगस्त, 1986 को स्वीकार की की तथा परकार को उन्हें लागू करने का परामर्श दिया गया था।

3. बोर्ड की अनियम रिपोर्ट सरकार को 31 जनवरी, 1989 को प्राप्त हुई थी। सिफारिशों का मार्गश संलग्न है।

4. भावधानीपूर्वक विचार करने के पश्चात्, सरकार ने बोर्ड द्वारा की गई सभी सिफारिशों को, सिवाय सिफारिशों के लागू करने की अवधि के, स्वीकार करने का निर्णय दिया है। बोर्ड ने सिफारिश की है कि सिफारिशों वस वर्षों के लिए लागू रहनी चाहिए। सरकार ने विचार करने के बाद यह निर्णय दिया है कि सिफारिशों को लागू करने की अवधि पांच बर्ष होगी त कि दस वर्ष जैसाकि बोर्ड ने सिफारिश की है। भारत सरकार नियोजकों, कर्मचारों तथा राज्य सरकारों से इन सिफारिशों को शीघ्र लागू करने के लिए अनुरोध करती है।

5. विस्तृत और/या गोण ममलों के मामलों के बारे में सभीसदों को परकारों द्वारा पारस्परिक आतंकित या स्वैच्छिक विवाचन द्वारा मुख्याया जाएगा।

बी. पी. साहनी, सचिव
अनुनानक

जीवी उद्योग के लिए तीमरे मजदूरी बोर्ड की सिफारिशों का सारांश

1. इस बोर्ड की सिफारिशों निम्न की सेवा-शर्तों को विनियमित करेगी :

- (1) केवल वैकल्पिक पान कारबानी के कर्मचारों
- (2) समय-समय पर यथा-संशोधित श्रीदोगिक विचाद अधिनियम, 1947 में निर्दिष्ट "कर्मकार" की परिभाषा के अन्तर्गत आने वाले सभी कर्मचारों तथा अम कल्याण अधिकारी, चिकित्सा और शैक्षिक स्टाफ, जिसमें इन्हें नामांकनी में निर्विट वर्ग सामिल हैं, इन सिफारिशों के अन्तर्गत आएंगे (अनुबन्ध-28)
- (3) निम्न के मंदिर में ठेका आधार पर नियोजित कर्मकार :

 - (क) कारबाना अधिनियम, 1948 की धारा 2(ट) में यथा परिभाषित अनिनिमण प्रक्रिया, या
 - (ख) नियमण प्रक्रिया के लिए प्रयुक्त मर्जनीय या परिसर के किसी सांग की मकाई में, या
 - (ग) नियमण प्रक्रिया में संगत या उमसे सम्बद्ध किसी प्रकार का कार्य या नियमण प्रक्रिया की वस्तु जिसमें कारबाना परिसर के अन्दर कच्चे माल की हैलिंग, लवाई या उत्तराई, स्टोर या नियमित उत्पाद शामिल है; या
 - (घ) जीवी कारबाने की मर्जनीरी, भवन या अन्य पूँजी आस्ति की अनुमत और अनुरक्षण;

(4) जीवी कारबाने द्वारा अपनी आवास कालोनी में कार्य के लिए नियोजित सभी अवधियों को इस बोर्ड की सिफारिश के प्रयोगन हेतु कर्मकार की परिभाषा में शामिल किया जाएगा।

(5) अविकर्मकार जो जीवी कारबाने में आंगिक रूप से काम करने के लिए, और सम्बद्ध उद्योग या जीवी कारबाने के रवासित वाले यथा कार्म में आंगिक रूप से नियोजित किया जाना है तो वह वही मजदूरी प्राप्त करेगा जो सम्बद्ध उद्योग या जीवी कारबाने में प्रबलित हो, जो भी अधिक हो।

(6) यदि किसी कर्मकार का जीवी कारबाने से किसी अन्य सम्बद्ध उद्योग, जिसमें गति फार्म भी शामिल है, में स्थानांतरण हो जाता है, तब वह वही मजदूरी प्राप्त करेगा जैसी कि जीवी कारबाने या उक्त सम्बद्ध उद्योग में प्रबलित हो, जो भी अधिक हो।

(7) जीवी कारबाने द्वारा ठेका आधार या विनियक मजदूरी, अनुमानीया या नैमित्तिक आधार पर रिपोर्ट के पैरा 33 में निर्विट कर्मकार की इयूटी करने के लिए नियोजित कर्मकार की न्यूनतम कुल मामिक मजदूरी की, (न्यूनतम सूच मजदूरी+निर्वर्तित भत्ता वर्दि कोई हो+महाराई भत्ता) जैसी बोर्ड से सिफारिश की है। 26 द्वारा विनायित करके गणना किए गए प्रभिकित की दर में भगतान किया जाएगा।

2. जीवी कारबाने से बाहर और गते की कमल काटने के लिए या इस जीवी कारबाने में साने ले जाने के लिए नियोजित ठेका अमिक को बोर्ड की सिफारिश के अन्तर्गत नहीं लाया जाएगा।

3. कर्मकारों के फिटबैंड के लिए बोर्ड नियमित वर्गों की सिफारिश करता है :

आपरेटिंग

- (1) अकुशल
- (2) अर्ध कुशल
- (3) कुशल- α
- (4) कुशल- β
- (5) अनि अधिक बीमत प्राप्त

नियमिक

- (6) लिपिक ग्रेड-IV
- (7)-III
- (8)-II
- (9)-I

पर्यवेक्षी ।

- (10) पर्यवेक्षी-ग
- (11)-ख
- (12)-क

4. बोर्ड द्वारा अनुमानित मानक आवासाधिक नामांवयी अनुबन्ध-28 पर दी गई है।

5. यूरोप शब्ददूरी बोर्ड की नामांवयी मूली में निर्विट शुल्क व्यवसायों को या सो निकाल दिया गया है या उन्हें अन्य व्यवसायों के नाम दिया दिया गया है। ऐसे व्यवसायों के बीचे अनुबन्ध-29 में दिए गए हैं। बोर्ड, मानक नामांवयी सूची को अनियम स्पष्ट देने के अनियमित, नियमित और सिफारिशों करता है :

- (1) कुशल-ग श्रेणी समाप्त हो जाएगी और यूरोप मजदूरी बोर्ड द्वारा इस श्रेणी की आपरेटिंग व्यवसायों की कुशल- α श्रेणी में रखा जाएगा;

(2) नसके प्रेड—V श्रेणी की समाप्त कर दिया गया है और दूसरे मजदूरी बोर्ड द्वारा इस श्रेणी को अबादित व्यवसायों की नसके—IV श्रेणी से रक्त जाएगा।

(3) पर्यावरण के—II और के—I श्रेणियों को निर्धारित किया गया है नसके उन पर्यावरण के सभी में पुनर पद्धतिमित किया गया है।

(4) नीमरे मजदूरी बोर्ड ने कुण्डल—ग को कुण्डल—व श्रेणी में मिला दिया है। ऐसे विवरण श्री शिवायि ने उन कर्मकारों का बंधन, जिन्हे उनमें मजदूरी बार्ड द्वारा कुण्डल—व श्रेणी में रक्त जाए गया है तथा जो उसी श्रेणी में है, संशोधित बेतनमान में उन्हें संशोधित बेतनमान की दी अनिवार्य बेतन बृद्धियों का लाभ देकर नियंत्रित किया जाएगा।

(5) व्यावसायिक नसकारों की सूची विविध जनी कारखानों में विद्यमान ध्येय श्रेणी की दर्शाती है। इनी सूची में उनके प्रत्युत्पादकीय पद के सबूत की कलानां नहीं हैं जहां ऐसा पद विद्यमान नहीं है।

(6) पदों के लिए अब निर्धारित अधेक्षित अर्हक तत्त्व अनुभव न रखने वाले मोजवा पदवारी संशोधित बेतनमानों के पास होंगे।

6 योर्ड ने निम्नलिखित मजदूरी बेतनमानों की सिफारिश की है और नसका नेत्रों पर लागू होंगे—

संशोधित मजदूरी बाट्टा

कर्मकारों की श्रेणी	संशोधित बेतनमान
क. ओपरेटिव	
1. अकुण्डल	800-10-900-15-1050/-
2. अर्ध-कुण्डल	900-15-1050-20-1250/-
3. कुण्डल—“व”	1050-25-1300-30-1600/-
4. कुण्डल—“ए”	1200-30-1500-35-1850/-
5. उच्च कुण्डल	1300-35-1650-40-2050/-
ख. लिपिक	
6. प्रेड—IV	1050-25-1300-30-1600/-
7. प्रेड—III	1200-30-1500-35-1850/-
8. प्रेड—II	1300-35-1650-40-2050/-
9. प्रेड—I	1400-40-1800-45-2250/-
ग. पर्यावरण	
10. प्रेड—सा	1400-40-1800-45-2250/-
11. सेड—बी	1500-45-1950-50-2450/-
12. सेड—ए	1700-60-2300-75-3050/-

टिप्पणी उनके मजदूरी बेतनमानों के अलावा पैरा 263 में हिंप गरे गए अन्य कर्मकारों की कुछ श्रेणियों को निर्धारित भत्ता देय है।

7 अक्षयि प्रस्तावित गजदूरी बेतनमानों की प्रत्यक्ष भवय 15 है, परन्तु उनकी वंदेया आठ है, व्यावर्कीय कुण्डल—“व”, कुण्डल—“ए”, उच्च कुण्डल तथा सिलिकीय प्रेड—I के बेतनमान कमवा निपिकीय प्रेड-IV, निपिकीय प्रेड-III लिपिकीय प्रेड-II तत्त्व पर्यावरणीयी सीधे हैं।

8. संशोधित बेतनमान में बेतन निर्धारित अर्हने के बाहरे में 1-1-1988 की स्थिति के अनुसार किसी कर्मकार की मोजूदा कुल मजदूरी के पूर्ण लाभ कर्मकारों की कुछ श्रेणियों को देने के लिए निर्धारित भत्तों

(नि.म.) की धारक बनाई गई है। निर्धारित भत्ता कर्मकारों की ऐसी श्रेणियों को देय है जहां 1-1-88 की मोजूदा बेतनमान में अनुत्तम कुल मजदूरी (मूल बेतन + प.म. भ. + सा.म. भ. + अ. र. + विशेष, तदर्थ बेतन) संशोधित बेतनमान में अनुत्तम मजदूरी ने अधिक है। कर्मकारों की उन श्रेणियों को जिन्हाँने भत्ता देय नहीं होता जहां 1-1-88 की मोजूदा बेतनमान में अनुत्तम कुल परिवर्तित संशोधित बेतनमान में किसी अन्यकार की मूल मजदूरी को व्याप्ति में रखें दिन उन श्रेणी के सभी कर्मकारों के लिए बाबावर हो द्येगा तथा यह निर्धारित भत्ता संशोधित बेतनमान के लाए रखने तक मिलता रहेगा।

कर्मकारों की किसी विशेष श्रेणी के लिए निर्धारित भत्ते को निर्धारित करने की प्रक्रिया निम्नलिखित है—

(1-1-88 की मोजूदा बेतनमान (संशोधित बेतनमान में नि.म. = के अनुसार पर कुल मजदूरी) — अनुत्तम मजदूरी)

(i) कर्मकारों की उन श्रेणी के मामले में, जिनके लिए पैरा 263 के अनुसार नि.भ. देय है, बेतनमान में उन श्रेणी के किसी कर्मकार की मूल मजदूरी 1-1-88 की मोजूदा बेतनमान में उसकी कुल मजदूरी में उसकी मूल मजदूरी का 10% छोड़कर, बाकी के यह कम से कम 40/- रु. हो, और उससे उन श्रेणी का निर्धारित भत्ता, यदि कोई हो, कम करके निर्धारित की जाएगी।

(ii) यदि उक्त उप पैरा (i) के अधीन निर्धारित संशोधित बेतनमान में किसी कर्मकार की मूल मजदूरी बेतनवृद्धि की स्थिति में आती है, तो मूल मजदूरी संशोधित बेतनमान में अनुत्तम धर पर निर्धारित की जाएगी।

(iii) कर्मकारों की उन श्रेणियों के लिए, जिन्हे निर्धारित भत्ता देय नहीं है तत्त्व 1-1-88 की मोजूदा बेतनमान में किसी कर्मकार की मूल मजदूरी में उसकी मूल मजदूरी का 10% बहसते कि यह कम से कम 40/- रु. हो, जोड़े जाने के बाद उसकी कुल मजदूरी संशोधित बेतनमान में अनुत्तम धर पर निर्धारित की जाएगी। यदि 1-1-88 को किसी कर्मकार की कुल मजदूरी तथा मोजूदा बेतनमान में उसकी मूल मजदूरी का 10% जो कम से कम 40/- रु. हो, नवे बेतनमान में अनुत्तम मजदूरों से अधिक है, तो नवे बेतनमान में उसकी मूल मजदूरी नवे बेतनमान में उचित बेतनवृद्धि पर निर्धारित की जाएगी।

(iv) यदि 1-1-88 को मोजूदा बेतनमान में कुल मजदूरी का हिस्सा 50 पैसे या इसमें अधिक है, और यदि यह हिस्सा 50 पैसे से कम है, तो इसे संशोधित बेतनमान में फिटमेट के प्रयोगनार्थ पुनर स्पदा कर दिया जाएगा या छोड़ दिया जाएगा।

9. कर्मचारियों के निम्नलिखित बहस अब निर्धारित संशोधित बेतनमान से अधिक प्रत्येक के मामले दर्शाई गई राशि प्राप्त करेंगे:

क्र.	मर्ज	क्षेत्र	बेटेज प्रति माह
1.	पर्लेटर/हम्मान	मर्जी शत्र	40/- रु. प्रति माह
2.	अलियु गुड परिप्रेर	-प्रयोगक्रम-	25/- रु. प्रति माह
3.	उच्च गति स्क्रिप्टिल शर्क	-प्रयोगक्रम-	25/-रु. प्रति माह
	कर्मचारी मर्जी में कार्यगत		
	अपकेन्द्री मर्जीन प्रबालकों को		
	छोड़कर अन्य अपकेन्द्री कर्मचार		
4.	चपरासी, वार्चमैन, स्पीपर	महाराष्ट्र	25/- रु. प्रति माह
	कर्मचारी		

पैसी: बेटेज राशि को न तो संशोधित बेतनमान में मूल मजदूरों को न निर्धारित करने समय और न दी किसी भी अवस्था में उसके हिस्से के रूप में दिया जाएगा।

10. जब कोई निम्न वर्ष का कोई रिलीवर किसी उच्च वर्ष में कर्मकार को रिसीय करता है, वह ऐसी मेया की अवधि के द्वारा उच्च वर्ष में कर्मकार द्वारा प्राप्त न्यूनतम भै अन्यून दरों पर वेतन तथा अन्य भौति प्राप्त करता। यह साधारण अवधारण भौति के प्रयोजनार्थ नियोजित रिलीवर को भी लागू होता। ऐसे कर्मकारों का प्रतिधारण भौति के भूगतान के प्रयोजनार्थ पिराई भीसम में मना की अवधि के द्वारा भूगतान की गई कल मजदूरी के अधिकत का भी द्वात में रखा जाएगा।

11. रिलीविंग कर्मकार का छाइकर यदि किसी अन्य कर्मकार को दो मिश्र भिन्न ग्रेडों में वार्ग-न गत तथा नियमनि स्तर में कार्यभार आवृद्धि किया जाता है, तब उसे दो ग्रेडों में से उच्चवर प्रत्यनाम तथा वेतनान दिया जाएगा। नवापि वह निम्न ग्रेड में निर्धारित कार्यभार का निष्पादन करने से छाकर नहीं करेगा।

12 यदि कार्म की पद स्थिति में कोई परिवर्तन है जर्म वर्ष 1986-87 (अक्टूबर, 1986 से मित्र्युग्र, 1987) में मौसमी तथा गार-मौसमी के मध्य कर्मकार द्वारा निष्पादित कार्यभार में से बेत्तवर कार्यभार के ग्रेड तथा बेत्तमान को समीक्षित बेत्तमान में निर्धारण के लिए माना जाएगा बत्तरे कि एक कर्मकार इस लाभ का हक्कदार नहीं होता यदि उसने पूर्ण मौसम मा पूरे गैर-मौसम में किसी उच्चवर ग्रेड में कार्यभार को निष्पादित किया हो।

13 अम कल्याण अधिकारी संबधित राज्य सरकारों द्वारा निर्धारित वेतनमान प्राप्त करेंगे। वर्गते कि कोई अधिकारी पर्यावरणी “अ” ग्रेड के लिए अब निर्धारित वेतनमान से कम प्राप्त नहीं करेंगा।

14. चिकित्सा अधिकारी को इस शोर्ड द्वारा सिकाइण किए गए संशोधित वेतनमान या उमके वर्तमन वेतनमान को अनन्त के विकल्प हाए।

15. कम्पाउंडर, नर्स, इमर नवा दायी जसे अन्य चिकित्सीय स्टाफ का बेतन मानक नामांकणी में उल्लिखित अपने बर्ग के अनुमार संशोधित बेतनमान में निर्धारित किया जायगा। जो कम्पचारी मूफ्त वर्द्धी, मूफ्त दिल्लीशी मकान लया विजली जैसी अन्य सुविधाएं या अर्द्ध भत्ते जैसे अन्य भत्ते प्राप्त कर रहे हैं, वह उन प्राप्त करने रहें।

१६ शिक्षण स्टाफ सर्वधित राज्य मराठों द्वारा निर्धारित वेतनमानां या विषमान वेतनमान, जो भी उच्चन्तर हो, को प्राप्त करेगा।

17 अधिविष्टना भाग् 60 वर्ष निरिखत की जाती है। बोर्ड अधिविष्टना भाग् से आगे किसी कर्मचारी के नियोजन को जारी रखने या सेवा मिशन्स के बाद उन जर्ती में कम हिनाकारी जर्ती पर पुनः नियोजन की प्रवाह का होता रहा। हिन करना है, जिन पर वे पहले सेवा में कर रहे थे। यदि किन्हीं कारणों से, ऐसे किसी कर्मचारी का नियोजन जारी रखा जाता है तो वह पहले ही की भावना उन्हीं सेवा जर्ती पर कार्य करेगा। ऐसे कर्मचारी, जिनकी सेवा का जारी रखा गया था या ऐसे जिनके 1-1-1988 को या उसमें पूर्व उसी पद पर पुनः नियोजित किया गया है, सेवा जारी रखे गुण है। उन्वें, 1988 में लागू हिस सिफारिश के साथ के भी लक्ष्य होंगे।

18. उपर्युक्त समय-समय पर यथासंगोष्ठित उपर्यान सदाय प्रविनियम 1972 के उपर्यन्तों के अनुभाव कर्मकारों को देय है।

19 बानम, गमय-ममय पर वयासंसोधित बोनम भक्त्य अधिनियम, 1965 के उत्तरांशों के अनुगार कर्मकार को देता है।

10. कमेचारिया या यूनियन (यूनियन) के नाय किसी ममक्षीते के प्रधीन 1-1-1988 को या उसके पश्चात् यदि किसी कारणाने ने मजदूरी, प्रतिशत में या अन्यथा काई यामान्य वृद्धि की है तो मजदूरी में ऐसी वृद्धि का बोनस द्वारा यथा यिकारिया मर्यादित बेनमानों में भवित्व की बेनवृद्धियों के लागत मजदूरी में वृद्धि से समाझौरन किया जाएगा।

21. कोई बीनी कारणाना, जोकि यह मानता है कि इसके पाय क्लालत वर्षागी है, अस्वीकृत फालत अभियों के संवर्ध में द्वय लिया ग

थिक्समान कानूनी उपबन्धों का सहारा से मक्ता है या वर्ष 1982 में उत्तर प्रदेश में द्विक्षयित समिति द्वारा लिए गए निर्णय जैसे आपसी राहमति के निर्णय का पालन किए जाने के लिए कर्मकार्य सूनिधिनों का दाखी कर मरमा दें।

22. परिवर्ती सहभाई भने की याजना निम्नानुसार होरी -

(i) परिवर्ती महानाई भत्ते का श्रीधारिक कर्मकारों के लिए 1960=100 पर श्राधारित अधिक भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के आधार पर भूगतान किया जाएगा। श्रम व्यूर्ने, शिमला, श्रम मंवालय, ने 1960=100 पर श्राधारित उपभोक्ता मूल्य सूचकांक को हटाकर उसके स्थान पर अक्षुब्ध, 1988 से श्रीधारिक कर्मकारों के लिए 1982=100 पर श्राधारित उपभोक्ता मूल्य सूचकांक की नई श्रृङ्खला को लिलीज किया है। 1960=100 आधार पर उ.म.सू. की अब श्रम व्यूर्ने श्रम व्यूर्ने डारा लिलीज किए गए 1.93 के लवान्गण कारक के गाथ 1982=100 आधार पर उ.म.सू. से गुणा करके गणना की गई है।

(ii) प.म. भने की गणना के लिए मूल वेतन वही हांगा जो सम्बोधित वेतनमान में मूल वेतन = निश्चित भन्त, यदि कोई हा।

(iii) परिष्कर्ती मंगलहाई भने की गणना मूल मजदूरी की उसी प्रक्रियनता के अनुसार की जाएगी जैसे उपर्युक्त (ii) में की गई है जिसके अनुसार श्रीदांगिक कर्मकारी के लिए उपर्योक्ता मूल्य सूचकांक (1960 = 100) 100% निश्चयावीकरण के मामले में उ.म.स.स. 711 (प्रगति-अनुबंध, 1987 की वैमानिक श्रीमत) के उपर रखेगा।

(iv) परिवर्ती महगाई भना उ. मू. मू. (1960-100) की वैमानिक श्रीमत के आधार पर उ. मू. मू. 744 आधार के ऊपर प्रत्येक तिमाही में संयोगित किया जाएगा।

(v) 100% की दर से मूल्यों का निश्चिरावीकरण (सूचकांक में बढ़ि) उनके लिए है जो माध्याधित बेतनमान जमा निश्चारित भना (यदि कोई है) में 1250 लाखे तक मूल मजबूरी प्राप्त कर रहे हैं।

(iv) उ. मृ. सू. में वृद्धि का 80% निपाभार्तीकरण उनके लिए है जो संयोगित बेतनमान अमा निर्धारित भने में यदि कार्ड है, 1250 रुपये में अधिक और 2050 रुपये स्था मूल बेतन प्राप्त कर रहे हैं लेकिन यह नए बेतनमान में 1250- रुपये मूल बेतन अमा निर्धारित भना, यदि कार्ड है, में प्राप्त करने वाले कर्मकारों को देय परिमिति महगाई भने की कम में कम न्यनतम राशि ही।

(vii) उम्. सू. में वृद्धि का 70% निप्रभावीकरण उत्के लिए है जो सांवित केन्द्रभान में 2050 लाये से अधिक मूल मजदूरी प्राप्त कर रहा है वर्ते कि यह 2050 रु. की मूल मजदूरी प्राप्त करने वाले कर्कारों को देय परिवर्ती महाराई भने की न्यूनतम रेशमि के बाहर है।

(viii) सूचकांक स्तर में प्रतिशतता, परियांत्रन ने दण्डनायक के बाद वा यको तक गणन की आएगी अर्थात् 1.235% की 1.21% से पूर्ण किया जाएगा और 1.234% की कल 1.23% में पूर्ण किया जाएगा।

(ix) पश्चिमी महांगाई भत्ते की याजना 744 के आधार उम्मीद (1960=100) के ऊपर पहिली जूलाई, 1949 से लागू होगी।

(x) परिवर्ती महाराई भने के भूगतान का शिश 50 पैसे या अधिक के अंश का अपर्याप्त रूप से मूर्त कर दिया जायगा तथा 50 पैसो से कम का छाड़ दिया जायगा।

23 (i) अकुशल कर्मकारों को प्रतिधारण भत्ते का भुगतान मूल बोनस जमा निवारित भत्ता, यदि कोई है श्री रीस-सोसम के मिल परिवर्ती महंगाई भत्ते का 15 प्रतिशत की दर से 1-1-1988 से किया जाएगा।

(ii) ऐसे अकूणल कर्मकार जो 15 प्रतिशत से अधिक की दर प्रतिधारण भाग प्राप्त कर रहे हैं उन्हें विद्यमान दर से भुगतान किया जाता रहेगा।

(iii) ये सभी श्रेणियों के कर्मकारों को विवरात दर से प्रतिशत भत्ते का भुगतान किया जाएगा।

(iv) यदि प्रतिशत भत्ते लेने वाले कोई दोस्री कर्मकार दोस्री दोस्री के दोगात सेवा-निवृत्त होता है तो वह अन्तीम सेवा-निवृत्त की सार्विक तक प्रतिशत भत्ते का पात्र होगा।

24 (i) ये कर्मकार जिन्हें पहली जनवरी, 1989 से बहले में कारबाह पर्याप्त में आवास आवंटित हैं दूसरे मजदूरी बोर्ड द्वारा निर्धारित अनुसूची के अनुसार मकान कियाग का भुगतान करने रहेंगे।

(ii) जिन कर्मकारों का पहली जनवरी, 1989 को पर्याप्त उम्मेद पर्याप्त आवास आवंटित किया गया है तात्काल 35 में से यह दर में मकान कियाग का भुगतान करेंगे।

25 दूसरे मजदूरी बोर्ड की नियारियों जो इस भार्ड की नियारियों से भिन्न नहीं हैं लाग दीनी रहेंगी।

26 यह नियारियों पहली जनवरी, 1989 में 10 वर्ष की अवधि के लिए लाग दीनी रहेंगी।

MINISTRY OF LABOUR

RESOLUTION

New Delhi, the 29th December, 1989

No.V-24014/2/89-WB.—By their Resolution No. V-24030/1/85-WB, dated the 17th July, 1985, the Government of India appointed the Third Central Wage Board for Sugar Industry with the following composition and terms of reference :—

COMPOSITION

Chairman

Shri Jagmohan Lal Tandon

Members representing Employers

- (1) Shri D.B. Kadam, MLA,
- (2) Shri O.P. Dhanuka

Members representing Employees

- (1) Shri Chandrika Singh,
- (2) Shri Veereshwar Tyagi.

Consequent on the resignation of S/Shri Veereshwar Tyagi and Shri D.B. Kadam, Shri Bhau Phatak and Shri Shivajirao Patil were appointed vide Order No. V-24030/1/85-WB, dated 23.1.86 to represent the employees and the employers respectively :

Terms of Reference

- (a) To determine the categories of employees (Manual, clerical, supervisory etc.) who should be brought within the scope of the proposed wage fixation ;
- (b) To work out a Wage structure based on the principles of fair wages as setforth in the report of the Committee on Fair Wages ;

EXPLANATION

In evolving a wage structure, the Board should in addition to the considerations relating to fair wages, also take into account :—

- (i) The needs of the industry in a developing economy ;
- (ii) The special features of the Sugar Industry ;
- (iii) The requirements of social justice; and

- (iv) The need for adjusting wage differentials in such a manner as to provide incentives to workers of advancing their skill;
- (v) The possibility of linking productivity with wages; and
- (vi) The desirability of extending the system of payment of results.

Explanation.—(1) In applying the system of payment of results, the Board shall keep in view the need for fixing a minimum (fall back) wage and also to safeguard against over work and undue speed. The Third Wage Board for Sugar Industry is also required to examine afresh the question of productivity as a factor for determining wages.

2. The recommendations made by the Wage Board for the grant of interim relief on 9.1.86 were accepted by the Government on 7th August, 1986 and the parties were advised to implement them.

3. The Board's final report was received by Government on the 31st January, 1989. A summary of the recommendations is appended.

4. After careful consideration, the Government have decided to accept all the recommendations made by the Board excepting one relating to the period of operation of the recommendations. The Board has recommended that the recommendations should remain in force for ten years. The Government after consideration have decided that the period of operation of the recommendations shall be five years and not ten years as recommended by the Board. The Government of India requests the employers, the workers and the State Governments to implement the recommendations expeditiously.

5. The differences over matters of detail and/or minor issues will be settled by the parties in mutual negotiations or by voluntary arbitration.

V. P. SAWHNEY Secy.

APPENDIX—IX

SUMMARY OF RECOMMENDATIONS OF THIRD WAGE BOARD FOR SUGAR INDUSTRY

1. The recommendations of this Board shall govern service conditions of :

- (i) The workers of the vacuum pan sugar factories only.
- (ii) All employees falling within the definition of "workman" as contained in the Industrial Disputes Act 1947 as amended from time to time shall be covered by the recommendations as also those employed as Labour Welfare Officer medical and educational staff including the categories detailed in the Standard Nomenclature (Annexure-XXVIII).
- (iii) The workers engaged on contract basis in connection with :
 - (a) Manufacturing process as defined in Section 2(K) of the Factories Act 1948 or
 - (b) Cleaning any part of the machinery or premises used for manufacturing process; or
 - (c) any other kind of work incidental to or connected with the manufacturing process or subject of manufacturing process including handling, loading or unloading of raw materials, stores, or finished product within the premises of the factory, or
 - (d) repair and maintenance of machinery, building or other capital assets of sugar factory.

(iv) All persons employed by the sugar factory for work in its residential colony shall also be included in the definition of workman for the purpose of the recommendation of this Board.

(v) If a workman is employed to work partly in the sugar factory and partly in the allied industry or sugarcane farm owned by the sugar factory, he shall receive the same wages as obtained in the allied industries or sugar factory whichever is higher.

(vi) If a workman is transferred from the sugar factory to any other allied industry including sugarcane farm then he shall receive the same wages as obtained in the sugar factory or that in the allied industry whichever is higher.

(vii) A workman employed by a sugar factory on contract basis or daily wages, on temporary or casual basis to perform the duties of a workman as detailed in para 33 of the report shall be paid at the rate per day calculated by dividing the minimum monthly total wage (Minimum Basic Wage + Fixed Allowance if any—VDA) as recommended by this Board by 26.

2. The contract labour employed outside the sugar factory and for harvesting sugarcane or its transport to the sugar factory shall not be covered by the recommendations of the Board.

3. The Board recommends the following categories for fitting of the workers:

Operatives:

- (i) Un-skilled
- (ii) Semi-skilled
- (iii) Skilled-B
- (iv) Skilled-A
- (v) Highly Skilled

Clerks:

- (vi) Clerk Grade-IV
- (vii) Clerk Grade-III
- (viii) Clerk Grade-II
- (ix) Clerk Grade-I

Supervisory:

- (x) Supervisory-C
- (xi) Supervisory-B
- (xii) Supervisory-A

4. The list of standard occupational nomenclature as approved by the Board is at Annexure-XXVIII.

5. Some of the occupations contained in the Nomenclature list of the Second Wage Board have either been deleted or merged with other occupations. The details of such occupations are given in Annexure-XXIX. The Board besides finalising the list of standard nomenclature makes the following further recommendations:

- (i) The category of Skilled-C stands abolished and the occupations allotted to this category by the 2nd Wage Board shall be placed in the category of Skilled-B.
- (ii) The category of Clerk Grade-C has been abolished and the occupations allotted to this category by the 2nd Wage Board shall be placed in Clerk-IV category.
- (iii) The categories of Supervisory A-II and A-I have been merged and are redesignated as Supervisory-A.

(iv) The 3rd Wage Board has merged Skilled 'C' into Skilled 'B' category. In the event of such merger, the pay of the worker who had been placed in Skilled 'B' category by the 2nd Wage Board and continue to remain in the same category, shall be fixed in the revised scales by giving them the benefit of two additional increments of the revised scale.

(v) The list of occupational nomenclature reflects the occupations normally in existence in different sugar factories. This list does not envisage creation of any post in accordance therewith where such post does not exist.

(vi) The present incumbents not having the requisite qualification and experience now prescribed for the posts shall be entitled to the revised scales.

6. The Board recommends the following wage scales applicable to all the regions:

Revised Wage Structure

Category of Workers	Revised Scale
A. Operatives	
1. Unskilled	— Rs. 800-10-700-15-1050/-
2. Semi-skilled	— Rs. 900-15-1050-20-1250/-
3. Skilled 'B'	— Rs.1050-25-1300-30-1600/-
4. Skilled 'A'	— Rs.1200-30-1500-35-1850/-
5. Highly skilled	— Rs.1300-35-1650-40-2050/-
B. Clerks:	
6. Grade-IV	— Rs.1050-25-1300-30-1600/-
7. Grade-III	— Rs.1200-30-1500-35-1850/-
8. Grade-II	— Rs.1300-35-1650-40-2050/-
7. Grade-I	— Rs.1400-40-1800-45-2250/-
9. Supervisory	
10. Grade-V	— Rs.1400-40-1800-45-2250/-
11. Grade-B	— Rs.1500-45-1950-50-2450/-
12. Grade-A	— Rs.1700-60-2300-75-3050/-

Note.—Besides the above wage scales, fixed allowance is admissible to some categories of workers as explained in para 263.

7. Though the ostensible number of proposed wage scales is 12, in fact their number is eight inasmuch as the scales of Skilled B, Skilled A, Highly Skilled and Clerical Grade-I are similar to those of Clerical Grade-IC, Clerical Grade-III, Clerical Grade-II and Supervisory V respectively.

8. In order to extend full benefit of the existing total wage of a worker as on 1-1-1988 to some categories of workers in the matter of fixation of pay in the revised scales, the concept of Fixed Allowance (FA) has been devised. The fixed allowance is payable to such categories of workers where total wage (Basic + VDA + GDA + IR + Special/ad-hoc) as on 1-1-88 at the minimum of the existing scale is higher than the minimum of the existing scale is higher than the minimum of the revised scale. There shall be no Fixed Allowance for the categories, where the total emoluments of a worker at the minimum of existing scale as on 1-1-88 is less than the minimum of the revised scale. The FA so determined shall be the same for all workers in that category irrespective of individual basic wage in the existing scale and that FA shall remain constant throughout the operation of revised scale.

The procedure for determining the fixed allowance for particular category of workers is as follows:

(Total wage at the FA as minimum of the existing scale as on 1-1-1988) – (Minimum of the Revised Scale)

- In the case of the category of workers to whom FA is admissible as per Para 263, the basic wage of a worker of that category in the scale shall be fixed by adding 10% of individual basic wage of the existing scale subject to a minimum of Rs. 40 to his total wage as on 1-1-1988 and deducting therefrom the fixed allowance, if any, of that category.
- In case the basic wage of a worker in the revised scale determined under sub-para (i) above falls in between the stages of the increments, the basic wage in the revised scale shall be fixed at the higher incremental stage.
- The categories of workers for whom fixed allowance is not admissible and that the total wage of the worker at his individual basic wage in the existing scale as on 1-1-88 after adding 10% of his individual basic wage in the existing scale subject to a minimum of Rs. 40 falls short of the minimum of the revised scale of that category, the basic wage will be fixed at the minimum of the revised scale. If the total wage as on 1-1-88 plus 10% of individual basic wage in the existing scale subject to a minimum of Rs. 40 is more than the minimum of the new scale, his basic wage in the new scale shall be fixed at the appropriate stage of increment in the new scale.
- If the total wage in the existing scale as on 1-1-88 is in the fractions of 50 paise or more it should be rounded off to the next higher rupee and the fractions of less than 50 paise may be ignored for the purpose of fixation in the revised scale.

9. The following categories of employees shall get weightage shown against each over and above the revised wage scale now fixed:

S. No.	Categories	Region	Weightage Per month
1.	Pattadar/Hammal	All regions	Rs. 40 P.M.
2.	Guest House Attendant	- do -	Rs. 25 P.M.
3.	Centrifugal Mazooor other than the Centrifugal Operators engaged in high speed automatic centrifugals.	- do -	Rs. 25 P.M.
4.	Peon Watchman Sweeper Cleaner	Maharashtra	Rs. 25 P.M.

NOTE The weightage amount shall neither be taken into account while fixing the basic wage in the revised scale nor shall it be taken as a part thereof at any stage.

10. When a reliever of a lower category reliever workman in a higher category, he shall during the period of such service receive pay and other allowances at the rates not lower than the lowest received by workmen in the higher category. This shall also apply to relievers employed for the purpose of following weekly holidays. For the purpose of payment of retaining

allowance to such workers, the average of the total wages paid during periods of service in the clutching season shall also be taken into account.

11. If a workman other than a relieving workman is allotted duties in two different grades alternatively and regularly, then he shall be given the designation and wage scale of the higher of the two grades. However, he shall not refuse to perform the duties prescribed in the lower grade.

12. If there is any change in the status of job as between the season and off-season in 1986-87 (October 1986 to September 1987) the grade and the wage scale of the better of the jobs performed by the workman shall be considered of fitment in the revised wage scale provided that a workman shall not be entitled to this benefit if he has not performed the duty in a higher grade in full season or in full off-season.

13. The Labour Welfare Officer will get the wage scale as prescribed by the respective State Governments subject to the condition that no officer shall get less than the wage scale now prescribed for the Supervisory B grade.

14. The Medical Officer shall be allowed either to opt for the revised wage scale as recommended by this Board or his existing wage scale.

15. The pay of other medical staff such as compounder, nurse, dresser and mid-wife shall be fixed in the revised scale as per their category mentioned in the Standard Nomenclature. These employees getting other amenities such as free uniform, free residential accommodation and electricity or other allowance such as Uniform Allowance, he/she shall continue to receive the same.

16. The teaching staff shall get the wage scales as prescribed by the respective State Governments or the existing scales whichever is higher.

17. The age of superannuation is fixed at 60 years. The Board discourages the practice of continuing the employment of an employee beyond the age of superannuation or re-employment after retirement on terms less favourable than those on which they were previously in service. If for any reasons, any such employee is continued in employment, he shall get the same terms of service as before. Such employees whose services were continued or who were re-employed in the same post on or before 1-1-1988 and still continuing in service, shall also be entitled to the benefit of this recommendation with effect from 1st January, 1988.

18. The gratuity is payable to the workers in terms of the provision of the Payment of Gratuity Act, 1972 as amended from time to time.

19. The Bonus is payable to the workers in terms of the provision of the Payment of Bonus Act, 1972 as amended from time to time.

20. If a factory has, on or after 1-1-1988 under any settlement with the employees or the union(s), given any general increase in wages, interim or otherwise, such increase in wages shall be adjusted again in the rate in wages on account of future increments in the revised scale as recommended by the Board.

21. A sugar factory which considers that it has surplus employees may resort to the existing Legal provisions on the subject in the context of alleged surplus labour or persuade the workers' union to follow the mutually acceptable course like the decision of the Bipartite Committee taken in U.P. in 1982.

22. The scheme of VDA shall be as under :

(i) VDA shall be paid on the basis of All India Consumer Price Index (CPI) for Industrial Workers on base 1960=100. The Labour Bureau, Shimla, Ministry of Labour, has released New Series of CPI for Industrial Workers on base 1982=100 from October 1988 replacing the CPI on base 1960=100. The CPI on base 1960=100 is now calculated by multiplying the CPI on base 1982=100 with the conversion factor of 4.93 released by the Labour Bureau.

(ii) The basic wage for calculating VDA shall be that in the revised scale plus Fixed Allowance, if any.

(iii) VDA shall be calculated at the same percentage of basic wage as in (ii) above by which the consumer Price Index for Industrial Workers (1960=100) rises over CPI 744 (quarterly average of August-October 1987) in the case of 100% neutralisation.

(iv) The VDA shall be revised every quarter on the basis of quarterly average of the CPI (1960=100) over the base CPI 744.

(v) Neutralisation of price (index rise) at the rate of 100% shall be for those drawing basic wage in revised scale plus FA, (if any) upto Rs. 1250/-.

(vi) 80% neutralisation of CPI rise shall be for those drawing basic pay in revised scale plus FA, if any, above Rs. 1250/- and upto Rs. 2050/- subject to the minimum of CDA amount payable to the workers drawing upto Rs. 1250/- as basic in new scale plus FA, if any.

(vii) 70% of neutralisation of CPI rise shall be for those drawing above Rs. 2050/- as basic wage in the revised scale subject to a minimum of VDA amount payable to the workers drawing Rs. 2050/- as basic pay.

(viii) The percentage change in the index level shall be calculated upto two decimal points i.e. 1.235% will be rounded off as 1.24% and 1.234% shall be taken as 1.23% only.

(ix) The scheme of VDA shall be implemented from 1st July, 1989 over base CPI of .44 (1960=100).

(x) The payment on account of VDA involving fractions of 50 paise and more may be rounded off to the next higher rupee and the fractions of less than 50 paise may be ignored.

23. (i) Retaining allowance shall be paid to unskilled workers at the rate of 15% of basic pay plus fixed allowance, if any, and VDA for the off-season with effect from 1-1-1988.

(ii) The unskilled workers getting retaining allowance at a rate higher than 15%, shall continue to be paid at the existing rate.

(iii) All other categories of workers shall be paid retaining allowance at the existing rate.

(iv) If a seasonal workman getting retaining allowance retires during the off-season, he shall be entitled to the retaining allowance till the date of his retirement.

(i) The workers allotted housing accommodation in the factory premises before 1st January, 1989 shall continue to pay house rent as per schedule determined by the Second Wage Board.

(ii) The workers allotted housing accommodation on or after 1st of January, 1989 shall pay house rent at the rate detailed in Table-35.

25. The recommendations of the Second Wage Board as are not varied by this Board shall continue to apply.

26. These recommendations shall remain in force for a period of 10 years with effect from the 1st of January 1988.

